ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को प्रकाशकोत्सव

दीपावली

की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 37, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 अक्तूबर से रविवार 19 अक्तूबर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम देवघर (झारखण्ड) के जीर्णोधार का शुभारम्भ

पूर्वजों की अर्जित सम्पदा को समाप्त नहीं होंने देंगे – महाशय धर्मपाल

महाशय जी ने की नए विद्यालय निर्माण के लिए एक करोड़ रुपये के सहयोग की घोषणा

सौ साल पुराने गुरुकुल के हालात को देखकर नम हुई आंखें : एक नए रूप में गुरुकुल के शीघ्र पुन: आरम्भ करने का संकल्प

पुराने भवन के जीर्णोद्धार के लिए 25 लाख रुपये की दानराशि एकत्र : महाशय धर्मपाल दयानन्द विद्या निकेतन नाम से नए विद्यालय का शिलान्यास

सार्वदेशिक सभा के संकल्पानुसार जीर्णोद्धार एवं भूमि रक्षा करने में कोई कसर नहीं रखेंगे – आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल

आर्यसमाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा भी करेंगे और वृद्धि भी – धर्मपाल आर्य

गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के जीर्णोधार एवं नए विद्यालय के शिलान्यास का आयोजन शनिवार 11 अक्तूबर, 2014 को प्रात: 11 बजे सम्पन्न हुआ जिसमें बिहार सभा के प्रधान गंगा प्रसाद, मन्त्री रमेन्द्र गुप्त, बंगाल सभा के अनेक अधिकारीगण, कलकत्ता की आर्यसमाजों से श्री अरुण आर्य, रमेश आर्य, चांदरत्न दामानी, दीपक आर्य, प्रमोद आर्य, खुशहालचन्द आर्य, झारखण्ड सभा के प्रधान भारत भूषण त्रिपाठी, मन्त्री श्री राज कुमार श्रीवास्तव, देवघर के अनेक आर्यजनों ने इस कार्य को इस गुरुकुल की दृष्टि से ऐतिहासिक बताया। एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेम कुमार अरोड़ा, श्री मनोज गुलाटी एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री राजीव आर्य विशेष रूप से उपस्थित थे।

विस्तृत समाचार अगले अंक में

131वें निर्वाण दिवस (दीपावली) पर विशेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती का महाप्रयाण

महर्षि दयानन्द के जीवन का मूल्यांङ्कन करते हुए जे.टी.एफ. जोर्डन ने अपनी पुस्तक "दयानन्द हिज लाईफ एण्ड वर्क्स" में लिखा है कि दयानन्द ने सच्चे शिव ईश्वर को जानने और उसकी प्राप्ति के उद्देश्य से घर छोड़ा किन्तु वे अपने उद्देश्य से भटक गये और सामाजिक कार्यों में ही अपना जीवन व्यतीत करते हुए अन्त में प्राण त्याग गये।

एक विदेशी विद्वान् ने ऋषि के जीवन पर कुछ लिखा, ऋषि के जीवन में उन्हें कुछ ऐसा लगा कि उनके जीवन पर लिखने के लिए अपनी लेखनी उठानी पड़ी यह तो स्वागत योग्य बात है किन्तु ऋषि के जीवन का मूल्यांङ्कन उन्होंने ऐसी टिप्पणी से किया कि 'वे अपने उद्देश्य से भटक गये थे', यह लिखकर स्वयं जोर्डन साहिब उद्देश्य से भटक गये।

बालक मूलशङ्कर ने शिवरात्रि के अवसर पर शिव के लिए व्रत रखे पर शिव की मूर्ति पर चूहा चढ़ते हुए और मूर्त्ति पर विष्ठा आदि करते हुऐ देखकर यह व्रत लिया था कि यह सच्चा शिव नहीं है मैं सच्चे शिव की खोज करके उसका दर्शन करुंगा। दूसरी घटना बालक मूलशङ्कर के जीवन के बाल्यकाल में उनकी बहन और चाचा की मृत्यु भी है जिसे देखकर मूलशङ्कर ने मृत्यु का रहस्य जानने का प्रण लिया। मूलशङ्कर ने इन्हीं उद्देश्यों से 22 वर्ष की अवस्था में घर छोड़ा और पचास वर्ष की अवस्था तक इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संलग्न रहे। मूलशङ्कर ने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए घर छोड़ने के बाद ब्रह्मचारी चैतन्य बने फिर संन्यास लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती बने। सच्चे शिव की खोज में उन्होंने सब कुछ छान मारा। इसी उद्देश्य

– शेष पृष्ठ 5 पर

ऋषि निर्वाण दिवस समारोह का सीधा प्रसारण संस्कार चैनल पर प्रात: 9 से 12 बजे तक

के सौजन्य से MDH

आर्यजन अधिकाधिक महानुभावों को SMS करके सूचित करके कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनें

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

131 वाँ

महर्षि दयानन्द सरस्वती

निर्वाण उत्सव

का भव्य आयोजन

वीरवार 23 अक्टूबर, 2014

यज्ञ : प्रात: 8.00 बजे

श्रद्धाञ्जलि सभा : मध्याह्न 12.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), दिल्ली-2

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
समय पर आयोजन स्थल पर पहुंचकर कार्यक्रम की सफलता में योगदान दें।

वेद-स्वाध्याय

पर्यावरण को मत बिगाड़ो

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसी: पृथिव्या सम्भव। अयंहि त्वा स्वधितिस्तेतिजान: प्रणिनाय महतो सौभगाय। अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्त्रवल्शा वि वयं रुहेम।। यजुर्वेद 5/43

अर्थ—हे विद्वन् पदार्थ-विद्या के गुणों को जानने वाले शिल्पिन् वैज्ञानिक! तू (**द्यां मा लेखी:**) जैसे यह यज्ञ द्युलोक की पुष्टि करने वाला है वैसे ही इसका संवर्धन कर सूर्य तत्त्व के साथ छेड़छाड़ मत कर (**अन्तरिक्षं मा हिंसी:**) अन्तरिक्ष में स्थित जलवायु की शुद्धि करने वाले यज्ञ के समान तू अपने आविष्कारों से इनकी शुद्धि करने वाला बन, इन्हें प्रदूषित मत कर (**पृथिव्या सम्भव**) परम सत्ता ने तुझे भूमि पर रहने के लिये बनाया है। (**अयं हि त्वा स्वधिति:**) कुठार या वज्र के समान पदार्थों को छिन्न-भिन्न या उनका विश्लेषण करने वाला तेरा विज्ञान, यन्त्रादि (**त्वा**) तुझे (**महते सौभगाय**) सभी सुखों का देने वाला (**प्रणिनाय**) होवे, प्राप्त कराये (**देव वनस्पते**) वृक्षायुर्वेद को जानने वाले विद्वन् (**अतस्त्वम्**) आप (**शत वल्शो विरोह**) सैंकड़ों जड़ों को भूमि में फैलाकर फूलने-फलने वाले वृक्ष की भाँति अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा से बहुविध सुखों को प्राप्त कर और आपके सान्निध्य से (**वयम्**) हम लोग (**सहस्त्र वल्शा वि रुहेम**) विविध सुखों को प्राप्त करने वाले होवें।

आज सर्वत्र पर्यावरण के प्रदूषित हो जाने की चिन्ता से पर्यावरणविदों को चिन्तित होते देखा जा सकता है। वायु, जल, वनस्पति एवं प्राणी सभी पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं। बढ़ती जनसंख्या ने संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है। इसका पेट भरने के लिये कृषि वैज्ञानिक संकरित बीजों को बना उन्हें किसानों को देते हैं और उन पर आक्रमण करने वाले कीटों तथा अन्य रोगों को रोकने के लिये जहरीले रासायनिक पदार्थों का छिड़काव करने को कहते हैं जिनके अत्यधिक प्रयोग से अन्न, शाक, सब्जी, फल आदि में इन हानिकारक तत्त्वों का प्रवेश हो गया है। साथ भी भूमि भी प्रदूषित होती जा रही है।

वाहनों से निकलने वाला धुआँ जिसमें कार्बन, सल्फर, पारा और अनेक विषाक्त तत्त्व होते हैं, वातावरण को प्रदूषित कर रहा है। वातानुकूलन के लिये प्रयोग में आने वाला क्लोरो-फ्लोरो कार्बन ओजोन की परत का विनाश कर रहा है। बहुत ऊँचाई पर उड़ने वाले विमान, राकेट आदि भी वायुमण्डल को प्रदूषित कर रहे हैं। ग्रीन हाऊस के प्रभाव से तापमान की वृद्धि हो रही है जिसके कारण ध्रुव प्रदेशों की बर्फ पिंघल रही है। हिमालय के ग्लेशियर पीछे सरकते जा रहे हैं। अनेक स्थानों पर ओजोन की परत में छेद हो गये हैं। यह गैस आक्सीजन का यौगिक है जो सूर्य किरणों के हानिकारक तत्त्वों को भूमि पर नहीं आने देती। ग्रीन हाऊस के प्रभाव से मौसम बदल गया है। कहीं पर अतिवृष्टि-अनावृष्टि हिमपात, ओले गिरना, तेजाबी वर्षा होना, भूकम्पादि विविध उपद्रव पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ करने से उत्पन्न हो गये हैं।

जहाँ विज्ञान ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक उपाय किये हैं वहाँ इन वैज्ञानिक आविष्कारों ने प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी से दोहन कर भूमि को बाँझ बना दिया है। आज विज्ञान शोषण का पर्यायवाची बन गया है। प्रत्येक देश यह योजना बनाता है कि किस नवीन यन्त्र के अनुसन्धान द्वारा हम अविकसित राष्ट्रों की सम्पदा का दोहन करें।

युद्ध के नये-नये शस्त्रास्त्रों का निर्माण किया जा रहा है। यदि वास्तविकता को जानें तो आज सारा विश्व बारूद के ढेर पर बैठा है। कहीं पर एक चिंगारी उठी और फिर ऐसा प्रलय का दृश्य उपस्थित होगा जिसकी कल्पना मात्र से ही व्यक्ति सिहर उठता है।

ऐसी स्थिति में वेद सावधान करते हुए कहता है—**द्यां मा लेखी: अन्तरिक्षं मा हिंसी:**=द्यु-लोक से छेड़छाड़ मत कर और अन्तरिक्ष को प्रदूषित मत कर। अन्तरिक्ष में रहने वाली वायु और जल के प्रदूषित हो जाने से प्राणियों का भूमि पर रहना असम्भव हो जायेगा। वनस्पतियों और जीव जन्तुओं की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं जिनका प्राकृतिक रूप में सन्तुलन बनाये रखने में बहुत योगदान रहा है। पशुओं को दी जाने वाली औषध डायक्लोफेम के प्रयोग से मृत पशुओं का मांस खाकर गिद्ध समाप्तप्राय: हो गये हैं। रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि को उर्वरा बनाने वाले केचुओं की क्षति हो रही है। फसलों में उत्पन्न हानिकारक कीड़ों को भक्षण करने वाली चिड़ियाओं के झुण्ड अब दिखाई नहीं देते। प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की एक लम्बी श्रृंखला है।

पृथिव्या सम्भव ऐ मानव! तुझे परमात्मा ने भूमि पर रहने के लिए बनाया है। यदि तेरा आकाश में उड़ना आवश्यक होता तो तुझे पंखों के साथ उत्पन्न किया जाता। पानी में पनडुब्बी से घूमने के स्थान पर तुझे मछली बना दिया होता। जब सृष्टि के आदि से मानव इस भूमि पर रहता आया है तो आज तेरी इस बढ़ती जाती एषणा की कहीं समाप्ति होगी या नहीं। इसे कौन जानता है?

यह भूमि तेरी माता है इसलिये जैसे बच्चा माता के स्तनों से शनै:-शनै: दुग्धपान करता है, स्तनों को काटता नहीं वैसे ही अपनी बुद्धि से इसका दोहन कर।

अयं हि त्वा स्वधिति: प्रणिनाय महते सौभगाय—तेरा यह यन्त्र-सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान तुझे सौभाग्य देने वाला होवे जिससे प्राणी मात्र का हितसाधन हो सके उसका विनाश करने वाला न हो।

जैसे वनस्पतियाँ **शतवल्शा** होकर अपनी जड़ों और शाखाओं का विस्तार कर फलती-फूलती हैं वैसे ही तू ऐसा उपाय कर जिससे प्राकृतिक संसाधनों को क्षति न पहुँचाते हुये उनका दोहन किया जा सके। जिस वृक्ष की जड़ों में ही कुठाराघात किया जायेगा उसकी वृद्धि रुक जाती है और एक दिन वह धराशायी भी हो जाता है। अन्धाधुन्ध जल का दोहन करने से भूमिगत जल का स्तर नीचे जा रहा है। रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति घट गई है। वृक्षों को काट नई बस्तियाँ या उद्योग-धन्धे लगाने की धुन में मरुस्थल बढ़ते जा रहे हैं और वर्षा कम होने लगी है। पर्यावरणविदों का कहना है कि वातावरण को सन्तुलित बनाये रखने के लिये कुलभूमि का एक तिहाई भाग वृक्षों से आच्छादित रहना चाहिये।

हे वनस्पते! वृक्षों के पालन-पोषण की विद्या को जानने वाले विद्वन्! तुम ऐसा उपाय करो कि **सहस्त्रवल्शा वि वयं रुहेम** हम भी वृक्षों के गुणधर्म जान उनकी वृद्धि करें और उनसे प्राप्त फल, फूल, लकड़ी आदि से धनैश्वर्य की प्राप्ति कर सौभाग्यशाली होवें। भूमि हमारी माता और हम इसके पुत्र हैं। कोई भी सुपुत्र अपनी माता को निर्वस्त्र या दीन-हीन अवस्था में देखना नहीं चाहेगा तो फिर हम भी इस भूमि माता को वृक्षों से क्यों न आच्छादित कर इसकी शोभा को बढ़ायें।

- *क्रमश:*

सम्पादकीय

दीप एक बुझ गया - घर-घर में जला कर ज्योति

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के ऐसे क्षण और कार्य जिनकी समानता संसार के किसी भी अन्य मतानुयायी महापुरूष से नही की जा सकती है । जिस समय 29 सितम्बर 1883 ई. को पाचक द्वारा दूध में विष दिए जाने पर उसे क्षमा ही नही किया अपितु 500 रुपये की धनराशि देकर उसको स्वदेश लौटाने की आज्ञा दी। महाराणा सज्जन सिंह के द्वारा अकूत सम्पत्ति से फलीभूत एक महंत के पद और सम्मान को ठुकराया हि नही बल्कि विश्व के इतिहास में त्याग की अभूत पूर्व घटना है। जिस साहित्य का उन्होंने संरक्षण और लेखन किया वह भी विश्व में अद्वितीय है। मृत्यु के कुछ समय पूर्व के दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त में आस्तिकता भाव समाहित हुआ जिसने उनके जीवन की धारा को ही बदल दिया । और लाखों लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए। इसलिए यह कहना समीचीन होगा कि वह बुझता हुआ दीप घर-घर के लिए रोशनी का चिराग बन गया, जो सबके हृदयों में ज्ञानरूपी प्रकाश की प्रेरणा जगाकर चला गया।

अब प्रश्न यह उठता है कि - जिस ज्योति को महर्षि ने जलाया, क्या उसको हम जलाए हुए है? या हमारे कर्त्तव्यों की अनदेखी से वह ज्योति बुझने की कगार पर तो नही है। यदि हम उन कार्यों में उत्साह पूर्वक संलग्न नही है तो वह वेद ज्ञान रूपी ज्योति कैसे प्रज्वलित रहेगी । इसलिए जिन कार्यो को महर्षि दयानन्द ने प्रारम्भ किया था वे कार्य कही न कही निश्चेष्ट अवस्था है। यदि हमें उस ज्योति को प्रज्वलित रखना है, तो हमें संस्कृत पठन-पाठन पर आचार्य कुलों का निर्माण करना होगा, अपने बालकों को संस्कृत अध्ययन हेतु आचार्यकुलों में प्रविष्ट कराना होगा, जहां शिक्षा के माध्यम से वेद ज्ञान घर-घर का खाजाना बने, अन्धविश्वास और रूढ़ि परम्पराएँ हमारे जीवन से हो इन कार्यो के लिए दूसरों को भी प्रेरणा दें। बृहद उत्सवों शिविरों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों के माध्यम से ही यह ज्योति जलती रह सकती है। यह समस्त आर्यसमाजों के लिए एक विचारणीय तथ्य है।

महर्षि ने अनेक कार्यों का उत्तरदायित्व अकेले निभाया । जिसमें वर्णोच्चारण शिक्षा- से लेकर वेदों के भाष्य तक विस्तृत एवं अनुपम सहित्य की सृजन और संवर्धन किया। पाखण्ड-खण्डन, नारी शिक्षा को प्रोत्साहन, गौ-संरक्षण, शुद्धि आन्दोलन, बाल विवाह व सती - प्रथा का उन्मूलन तथा स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु दिशा निर्देश, संस्कृत पठन-पाठन गुरुकुलों की व्यवस्था तथा सुशासन के हित राज धर्म की उत्कृष्ट व्यवस्था का विधान अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से प्रस्तुत की। अत: हमें आज महर्षि निर्वाण दिवस पर व्रत लेना है कि ऋषि के मिशन को साकार एवं सफल बनाने के लिए लेखन कार्य को प्रोत्साहन देना है। पाखण्ड को समाप्त करना, अन्धविश्वासों को नष्ट करना, गौ संरक्षण, नारी शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना एवं वेदाध्ययन हेतु संस्कृतकुलों की स्थापना करना यही हमारे जीवन एवं संस्थाओं का उद्देश्य होना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में दिल्ली प्रतिनिधि सभा के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य करें। जो वर्तमान आर्यसमाजों तथा दूर-दराज के पिछड़े एवं उपेक्षित क्षेत्रों में संस्कृतकुलों की स्थापना कर महर्षि ऋषि जी के मिशन को आगे बढ़ा रही है। जो उनके लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि है और उपरोक्त कथन की सार्थकता भी-" **दीप एक बुझ गया - घर-घर में जला कर ज्योति** "।

गतांक से आगे

महर्षि दयानन्द और मांसभक्षण निषेध

(12) मांसाहारी म्लेच्छ हैं - जो जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ है उनका सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए, और मद्यमांसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्यमांस के परमाणुओं से ही पूरित है उनके हाथ का न खावें। स० प्र० पृ० 392 द० प्र०।

नोट:- वहां स्वामी जी महाराज ने मद्यमासाहारियों को ही म्लेच्छ नाम दिया है।

(13) मांस-भक्षण घातक और हिंसक हैं - अनुमति (मारने की सलाह) देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिये लेने और बेचनें, मांस के पकाने, परसने और खाने वाले आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं। गो.नि.पृ.930.द.प्र.।

(14) मांसाहारी अपराधी हैं और मांसाहारियों के हाथ का खाना उचित नहीं - हां! मुसलमान ईसाई आदि मद्य मांसाहारियों के हाथ के खाने में आर्यो को भी मद्यमांसादि खाना पीना अपराध पीछे लग पड़ता है। स०प्र० पृ० 391 द० प्र०।

(15) मांसाहारी प्रपंची होते हैं - अब विचारिये ईसाईयों का परमेश्वर गाए बैल आदि की भेंट लेने वाला जो कि अपने लिये बलिदान कराने के लिये उपदेश करता है वह बैल गाए आदि पशुओं के लोहू मांस का भूखा प्यासा है वा नहीं? इसलिये वह अहिंसक और ईश्वरकोटि में गिना कभी नहीं जा सकता। किन्तु मांसाहारी प्रपञ्ची मनुष्य के सदृश्य है। स० प्र० पृ० 659 द० प्र०।

(16) मांसभक्षक विश्वासघाती है।

देखिये! जो पशु नि:सार घास तृण पत्र फल फूलादि खावें और सारदूधादि अमृत रुपी रत्न देवें, हल, गाड़ी आदि में चल के अनेक विधि अनादि उत्पन्न कर सब के बल-बुद्धि पराक्रम को बढ़ा के नीरोग करें, पुत्र पुत्री और मित्रादि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहां बांधें वहाँ बंधे रहे, जिधर चलावे उधर चलें, जहां से हटावें वहां से ही हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें अपनी रक्षा के लिये पालन करने वाले के समीप दौड़ कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा, जिनके मरने पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिये दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवे, अपने स्वामी की रक्षा के लिये तन मन धन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिये है, इत्यादि शुभ-गुणयुक्त सुख-कारक पशुओं के गले छुरों से काट कर, जो अपना पेट भर, सर्व संसार की हानि करते है क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दु:ख देने वाले और पापी जन होंगे। (गो० नि० पृ० 924 द० प्र०)

"राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हो उन को दण्ड देवें और प्राण से भी वियुक्त कर दें।"

प्रश्न:- फिर क्या उनका मांस फेंक दें?

उत्तर:- चाहे फेंक दे चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती। किन्तु उस मनुष्य का स्वाभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा और चोरी विश्वासघात, छल कपट आदि से पदार्थो को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य है। स०प्र०पृ० 394 द०प्र०।

(17) मांसाहारी निष्ठुर, कठोर, स्वार्थी और मूर्ख होते हैं - हे परमेश्वर क्यों इन मांसाहारियों के आत्मा में दया प्रकाश कर निष्ठुरता कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता।

गो० नि० पृ० 925 द० प्र०

(18) पशुहिंसक मनुष्यों के घातक हैं - म० प्र० पृ० 393 पर गौ, भैस और बकरी के लाभ दर्शाकर पुन: लिखते है-

"वैसे हाथी, घोड़े ऊट, भेड़ गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते है। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानिऐगा।"

(19) मांसभक्षण आर्यो के दु:खो की वृद्धि का कारण है - "देखो! जब आर्यो का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल में बड़े आनन्द मे मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे जब से विदेशी मांसाहारी इस देश मे आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश: आर्यों के दु:ख की बढ़ती होती जाती है।" स०प्र० पृ० 393 द० प्र०।

(20) मांसाहारियों के रसोईघर का घिनौना चित्र -"जैसे मिंया जी के रसोई के स्थान में कहीं कोइला, कहीं राख, कहीं लकड़ी, कहीं फूटी हाण्डी, कहीं जूठी रकेबी, कहीं हाड़ गोड़ पड़े रहते हैं और मक्खियों का तो कहना ही क्या! वह स्थान ऐसा बुरा लगता है कि जो कोई श्रेष्ठ मनुष्य जाकर बैंठे तो उसे वान्त होने का भी सम्भव है। स० प्र० पृ० 393 द० प्र०

(21) मांसाहार वाममार्गियों की लीला और पामरपन है - प्रोक्षित, अर्थात् यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं। ऐसी पामरपन की बातें वाममार्गियों ने चलाई है। स०प्र०पृ०413 द० प्र०

इसी विषय में स्वमीजी महाराज स०प्र०पृ०556 द०प्र० लिखते है-

"और जो मांस खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों" की लीला है इस लिए उन को राक्षस कहना उचित है। परन्तु वेदों में कहीं मांस का खाना नहीं लिखा।

(22) मांसाहारी दयाहीन होते हैं- "समीक्षक:- अब देखिए सज्जन लोगो! जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खावे उसके उपासक गाए बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़ें। जिनको कुछ दया नहीं और मांस खाने में आतुर रहे वह बिना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है?"

स० प्र० पृ० 646 द० प्र०।

देखो! मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं।

गो०क०नि० 28 पृ०:-

(23) मांसाहारी जगत् के लिए हानिकारक हैं - "जब ईसाईयों का खुदा भी बैलों का बलिदान लेवें तो उसके भक्त गाए के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यों न भरे? और जगत् की हानि क्यों न करे?" स०प्र०पृ०628 द०प्र०

(24) स्वामीजी मांसाहार को जंगलीपन मानते हैं- "अब देखिए, ये सब जंगली लोगों की बातें है वा नहीं? और परमेश्वर बैलों का बलिदान लेता और वेदी पर लोहू छिड़कता, यह कैसी जंगलीपन असभ्यता की बात है!" स०प्र०पृ० 658 द०प्र०।

"समीक्षक- वाह जी! यदि ऐसा है तो इनके अध्यक्ष तथा न्यायाधीश तथा सेनापति आदि पाप करने से क्यों डरते होंगे?" आप तो यथेष्ट पाप करें और प्रायश्चित के बदले में गाय, बछिया, बकरे आदि के प्राण लेवें, तभी तो ईसाई लोग किसी पशु व पक्षी के प्राण लेने मे शंकित नहीं होते! सुनो ईसाई लोगो! अब तो इस जंगली मत को छोड़ के सुसभ्य धर्मम्य वेद-मत को स्वीकार करो कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो।

स० प्र० पृ० 661 द० प्र०

(25) मांसभक्षण छोकड़ापन है -"मांस-भक्षण करने, मद्य पीने, परस्त्री-गमन करने आदि में दोष नहीं है, यह कहना छोकड़ापन है। क्योंकि बिना प्राणियों के पीड़ा दिए मांस प्राप्त नहीं होता और बिना अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं।" स०प्र०पृ०414 द० प्र०

(26) बीमारी की अवस्था में भी मांसभक्षण का निषेध-

"**हिंसक:**- जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता वहां वा आपद्/आपत् काल में, अथवा रोगनिवृत्ति के लिए मांस खाने में दोष नहीं होता"।

रक्षक- यह आपका कहना व्यर्थ है, क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं वहां पृथ्वी अवश्य होती है, जहां पृथ्वी है वहां खेती वा फलफूल आदि अवश्य होते हैं और जहां कुछ भी नहीं होता वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। जहां ऊसर भूमि है, वहां मिष्ट जल और फलादि के न होने से मनुष्यों का रहना दुर्घट है और आपत्काल में भी अन्य उपायों से निर्वाह कर सकते हैं। जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं और बिना मांस के रोगों का निवारण भी औषधियों से यथावत् होता है। इसलिए मांस खाना अच्छा नहीं।

गो०नि० पृ० 927 द० प्र०।

(27) मांसभक्षण, मद्यपान के समान पाप है - "इसलिए दयालु परमेश्वर ने वेदों में मांस खाने वा पशु आदि के मारने की विधि नहीं लिखी। मद्य भी मांस खाने के कारण है। इसलिये यहां संक्षेप से लिखते है:-"

प्रमत्त:- कहो जी मांस तो छूटा सो छूटा, परन्तु मद्य पीने में तो कोई भी दोष नहीं?

शान्त:- मद्य पीने में भी वैसे ही दोष है जैसे कि मांस खाने में। मनुष्य मद्य पीने से नशे के कारण नष्टबुद्धि होकर अकर्त्तव्य पर लेता और कर्त्तव्य को छोड़ देता है।

गो०नि०पृ०930, 931 द० प्र०

नोट:- भगवान् मनु ने जो पाप गिनाए हैं, उन में मद्यपान और मांसाहार भी आ जाते है। भगवान् दयानन्द इन दोनों को बराबर समझते हैं।

लेखकीय टिप्पणी- महर्षि दयानन्द जी मांसाहार के अत्यन्त विरुद्ध थे। अपने ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर इसका खण्डन किया है। मैंने श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी के कहने पर ऋषि के वेदभाष्यों और पत्रों के अतिरिक्त उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों से प्रमाण कर दिए है। आशा है, लोगों को मांसाहार के विषय में महर्षि की सम्मति में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहेगा। और वे इस घिनौने कर्म को सर्वथा छोड़ देंगे।

श्री प्रकाश चन्द्र मुद्रक द्वारा,
दी आर्य प्रेस लिमिटेड, 17
मोहनलाल रोड लाहौर

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द जी के कल्याणकारी विचार

- आचार्य भगवानदेव विद्यालंकार

संसार में समय-समय पर कुछ दिव्य आत्मायें ऐसी आती हैं, जिनके विचार, प्रेरणायें एवं शिक्षायें समाज में एक क्रान्ति ला देते हैं। स्वामी दयानन्द जी एक ऐसे ही महानपुरुष थे जिनके विचार मानव-मात्र के लिए अत्यन्त कल्याणकारी हैं। यद्यपि उस समय देश अंग्रेजों के आधीन था, कार्य करने की पूरी आजादी नहीं थी। सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक व्यवस्थायें छिन्न-भिन्न थी। मठ-मन्दिरों में गुरुडम, अन्धविश्वास और मूर्ति-पूजा का बोलबाला था। सच्चे ईश्वर की स्थापना के स्थान पर प्रकृति, जड़मूर्ति, तुलसी-पूजा, पीपल के वृक्ष की पूजा, शिवलिंग की पत्थर पूजा का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। यज्ञों में, देवी के नाम से मन्दिरों में पशुओं की बलि दी जाने लगी थी। छूआ-छूत का बोलबाला था। जन्मजात, जाँत-पाँत की मान्यता थी। वर्ण व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। ऐसे विकट, संघर्ष भरे युग में स्वामी दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ। हमें कल्याण का मार्ग दिखाया। पवित्र विचारों की धारा मानव-समाज को प्रदान की। उदाहरण के रूप में उनके द्वारा दिये गये सत्य सनातन कल्याणकारी सूत्रों में कुछ विचार प्रस्तुत हैं।

1. विद्या-सम्बन्धी विचार - "वेत्ति यथावत्तत्वं पदार्थ स्वरूपं यथा सा विद्या" अर्थात् जिससे पदार्थों का यथार्थ बोध होवे वह विद्या है। 'विद्या' से ज्ञान प्राप्त होता है, बिना ज्ञान के, विद्या के, मनुष्य दु:खों से, कष्टों से, अशान्ति से, बन्धन से, नहीं छूट सकता। माता-पिता अपने बच्चों को कर्त्तव्य बोध के लिए, लक्ष्य प्राप्ति के लिए विद्या पढ़ाते हैं। शिक्षा-मन्दिर, गुरुकुल और विद्यालयों में भेजते हैं। कल्याणकारी विचार-

माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित:। न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये वको यथा।।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं कि "वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने अपने बच्चों को विद्या-प्राप्ति नहीं कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे ही तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हँसों के बीच में बगुला। यही माता पिता का कर्त्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना"।

विद्या-प्राप्ति के लाभ- **'विद्ययामृतमश्नुते'** अर्थात यथार्थ ज्ञान रूपी विद्या से मनुष्य मोक्ष रूपी सुख को प्राप्त कर लेता है। दु:खों से छूट जाता है।

स्वामी जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम बनाया कि-

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

वेदरूपी विद्या ईश्वर से प्रकट हुई है इसलिए कहा है-

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है"। विद्या से ही व्यक्ति वेद-ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, विद्या से ही वह ईश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, विद्या से ही संसार में रहते हुए धन कमा सकता है। **"यस्य नास्ति अन्ध एवं स:"** जिसके पास विद्यारूपी, ज्ञान रूपी नेत्र नहीं है दुनिया में बस वही अन्धा है। **"विद्या धनमधनानाम्"** आचार्य चाणक्य के शब्दों में विद्या निर्धनों का भी धन है। विद्या में यह सामर्थ्य है कि वह गुण ग्राही ज्ञानियों, निर्धनों व विद्वानों का आदर करवा देती है।

2. अविद्या से बचने के लिए प्रेरणा- **"यथा तत्त्वरूपं न जानाति भ्रमादन्यस्मिन् अन्यत् निश्चिनोति सा अविद्या"**। अर्थात् जिससे तत्त्व स्वरूप न जान पड़े, भ्रम से, अज्ञानता से, अन्ध विश्वासों से ग्रसित होकर बुद्धि भ्रमित हो जावे, वह 'अविद्या' है। **"अनित्याशुचि दु:खानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मख्या तिरविद्या"** योग शास्त्र साधन पाद सूत्र-5 महर्षि योगशास्त्र का वचन प्रस्तुत कर अविद्या को दूर करने का विचार देते हैं अर्थात्-

(1) **अनित्य में नित्य जानना-** यह सम्पूर्ण जगत् और उसकी सम्पत्ति अनित्य है क्योंकि यह जगत् उत्पत्ति वाला है विनाशी है इसको नित्य समझना अविद्या है।

(2) **अशुचि में शुचि का जानना-** अपवित्र में पवित्रता का ज्ञान, जैसे शरीर कफ, रुधिर, मल, मूत्र का स्थान है। इसको पवित्र मानना। अन्याय, चोरी और हिंसादि से चुराया, कमाया गया धन अपवित्र है, उस धन को पवित्र मानना अविद्या है। अधर्म, पाप, हिंसा आदि से रंगा हुआ अन्त:करण अपवित्र है उसको पवित्र समझना 'अविद्या' है।

(3) **दु:ख में सुख का ज्ञान** - संसार के सब विषय दु:ख रूप हैं उनमें सुख समझना, उनके पीछे दौड़ना 'अविद्या' है।

(4) **अनात्म (जड़ पदार्थ में) आत्म ज्ञान-** शरीर इन्द्रियाँ और चित्त ये सब अनात्म हैं। जड़ हैं। इनको ही आत्मा समझना, इनकी तृप्ति में लगे रहना 'अविद्या' है।

अविद्या से प्राप्त होने वाली हानि-

'अविद्या' अज्ञानता, अन्धविश्वासों व कुरीतियों की जड़ है। इसके आने से व्यक्ति बन्धन में आ जाता है। बुराइयों में फंस जाता है। दु:ख प्राप्त करता है। पतन की ओर जाता है। मूर्ति-पूजा सबसे बड़ी अविद्या है। बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु-दु:ख से पार कोई नहीं होता। इसलिए आर्य समाज का आठवाँ नियम बनाया- "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए"

3. मोक्ष सम्बन्धी विचार - महर्षि का मानना है कि मानव जीवन का परम लक्ष्य 'मोक्ष' प्राप्त करना है। जब तक जीवात्मा 'मोक्ष' प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक यह जीव बार-बार जन्म लेता है और बार-बार मृत्यु रूपी दु:खों को प्राप्त करता है। बिना मोक्ष के अत्यन्त दु:खों से छूटना असम्भव है।

बन्धन क्या है?- "जो-जो पाप कर्म, ईश्वर से भिन्न की उपासना, अज्ञान, अविद्या आदि से प्राप्त सब दु:ख परेशान करने वाले हैं, इसीलिए यह बन्धन का कारण है।"

मुक्ति क्या है?- "सर्व दु:खों से छूटकर बन्धन रहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द के भोग के पुन: संसार में आना।" न भय, न शंका, न दु:ख होता है। जहाँ इच्छा हो वहाँ विचरे, कही अटके नहीं।

मुक्ति के साधन- "ईश्वर-उपासना अर्थात् प्रतिदिन योगाभ्यास करना धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या-प्राप्ति, आप्त विद्वानों का सत्संग, सत्यविद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं।" अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने का प्रयास करना इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनमें विपरीत् ईश्वर-आज्ञा भंग करने आदि काम से बन्धन होता है। नित्य प्रति न्यून से न्यून दो घण्टा पर्यन्त मोक्ष चाहने वाले मुमुक्षुजन ध्यान अवश्य करें, जिससे भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों।

4.सत्याचरण का पालन सम्बन्धी विचार- "जैसा हमने सुना हो, जैसा देखा हो और जैसा अनुभव किया हो, वैसा कह देना या वैसा प्रकट कर देना **'सत्य'** कहलाता है।" जैसा हमने सुना हो, जैसा हमने देखा हो और हमने अनुभव किया हो, अपने विश्वास के विपरीत, देखने और सुनने के प्रतिकूल कथन करना **'असत्य'** कहलाता है। महर्षि ने 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में लिखा है- "जैसा कुछ अपनी आत्मा में हो और असम्भवादि दोषों से रहित करके सदा वैसा ही बोले उसको **'सत्य भाषण'** कहते हैं"। "जो सत्यप्रिय धर्मात्मा विद्वान् सबके हितकारी और महाशय होते हैं वे **'सत्पुरूष'** कहाते हैं।"

सत्य बोलने के लाभ ही लाभ - जो व्यक्ति सब व्यवहारों में झूठ को छोड़कर, सत्य ही कहते हैं, उनको लाभ ही लाभ होते हैं हानि कभी नहीं क्योंकि सत्य व्यवहार करने का नाम **धर्म** और विपरीत व्यवहार करने का नाम **अधर्म** है। किसी कवि का यह कथन उचित ही है-

साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप।।

सत्य बोलना चाहिये। इस प्रकार के "प्रमाण व उपदेश" वेदों, उपनिषदों, स्मृति ग्रन्थों, महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थों आदि में दृष्टिगोचर होते हैं।

" अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम्।तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।" (यजु० 1/ 5)

'महर्षि' यजुर्वेद के मन्त्र का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि मनुष्य में मनुष्यपन यही है सर्वदा झूठ व्यवहारों को छोड़ सत्य व्यवहारों का सदा ग्रहण करें। मन्त्र में भगवान से भी सत्य बोलने की प्रार्थना की गई है कि **अग्ने व्रतपते!** हे अग्नि स्वरूप व्रतपति, व्रतों के पालक परमात्मन्! मैं सत्यादि व्रतों का पालन करूँगा क्योंकि सदा **सत्यमेव जयते** सत्य ही का विजय और झूंठ का पराजय होता है। महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" सत्यरूपी 'ज्ञान-विज्ञान' का भण्डार है। आर्य समाज के प्रथम पाँच नियमों में महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने बार-बार 'सत्याचरण' पर विशेष बल दिया है। चौथा नियम है-

5. "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए"। महर्षि मनु के अनुसार **सत्यं ब्रूयात्** सत्य बोलना चाहिए **प्रियं ब्रूयात्** लेकिन सत्य भी ऐसा बोलना चाहिए जो प्रिय हो, मधुरता से युक्त हो, सबको अच्छा लगे **न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्** जिस सत्य में मधुरता न हो, जो सत्य प्रिय न हो ऐसा अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए।

इस प्रकार महर्षि के जीवन से हमें सत्याचरण, सत्य-व्यवहार, सत्य विचार ग्रहण करने की शिक्षा मिलती है। एक कवि का सुन्दर कथन है-

"तुम भारत माँ के वीर बनो,
तुम पुजने वाले पीर बनो।
सत्युग में हरिश्चन्द्र हुए थे,
त्रेता में श्री राम हुए थे,
द्वापर में श्री कृष्ण हुए थे,
कलियुग में दयानन्द हुए थे,
सत्य पे वे पाबन्द हुए थे,
ऐसे तुम धर्मवीर बनो।।"

5. धर्म के सम्बन्ध में विचार- "जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सत्यभाषणादि युक्त ईश्वर-आज्ञा वेदों से अविरूद्ध है उसको "धर्म" मानता हूँ।" जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण, मिथ्या भाषणादि, ईश्वर-आज्ञा भंग वेद विरूद्ध है उसको **"अधर्म"** मानता हूँ- स्वमन्तव्य+अमन्तव्य प्रकाश महर्षि द्वारा विचरित "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" में धर्म विषय पर लिखते हुए कहते हैं- "वेदों की रीति से धर्म के लक्षणों का वर्णन किया जाता है"। इस सम्बन्ध में महर्षि अनेक ये मन्त्र ऋग्वेद अष्टक 8 अध्यास 8 मन्त्र 2,3,4 इत्यादि प्रस्तुत करते हुए किस-किस को धर्म धर्म मानते हैं जैसे-

(1) **संगच्छध्वम्**- तुम लोग विरूद्धवाद को छोड़कर परस्पर आपस में प्रीति के साथ मिलकर रहो

- शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती ....

प्रथम पृष्ठ का शेष

से वे जङ्गलों में भटके, पहाड़ों को छाना, नदियों को पार किया, मठों और आश्रमों में ठिकाना ढूंढा, योगियों की शरण में रहकर योगाभ्यास किया, अनेक विद्वानों से अनेक शास्त्र पढ़े, गुरुओं से शिक्षा ली, सभी ग्रन्थों को पढ़ डाला और क्या कुछ नहीं किया जो उन्हें इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करना चाहिए था।

इतना सब कुछ, अपना जीवन लगाने के बाद उन्हें इस उद्देश्य में सफलता मिली। घण्टों-घण्टों समाधि लगाने की अवस्था तक पहुँचे और समाधि में उन्हें सच्चे शिव का अनुभव और साक्षात्कार होने लगा। अन्त में कुछ विद्या और प्राप्त करने के लिए वे गुरु की तलाश में गुरु विरजानन्द जी महाराज के पास मथुरा पहुँचे। बाहर से गुरु की कुटिया का दरवाजा खटखटाया, अन्दर से आवाज आई, कौन है?

दयानन्द ने बाहर से कहा कि यही तो जानने के लिए आया हूं कि मैं कौन हूं? गुरु तो पारखी थे, पहचान गये कि आज तो सच्चा जिज्ञासु, सच्चा शिष्य आ गया है। दरवाजा खोला और पूछा कि क्या पढ़े हो? दयानन्द ने भी अनार्ष ग्रन्थ गिनवा दिये। गुरु ने आदेश दिया कि इन अनार्ष ग्रन्थों को यमुना में बहाकर आओ। गुरु विरजानन्द ने शिष्य दयानन्द को आर्ष ग्रन्थों का आभास दिखला दिया। पाणिनी की अष्टाऽयायी, पतंजलि ऋषि का महाभाष्य, यास्कमुनि का निरुक्त पढ़ा कर वेदविद्या के रहस्य को समझाने की कुञ्जी दयानन्द को दे दी। दयानन्द ने वहां अपना विद्याध्ययन पूरा करके गुरु दक्षिणा दी। दक्षिणा में गुरु के प्रिय लौंग भेंट किये, और गुरु से विदाई का आदेश मांगा। गुरु विरजानन्द ने आदेश दिया कि बेटा! जो सच्चे शिव की प्राप्ति और जो वेद विद्या का ज्ञान तुमने अपने जीवन का अमूल्य यौवनकाल लगातार प्राप्त किया है उसका आनन्द तुम अकेले मत लेना। यह असंख्य प्राणी, असंख्य आत्माएँ-समूची जनता अज्ञान के अन्धकार में डूबी हुई दु:ख सागर में गोते खा रही है, ईश्वर के नाम पर मतमतान्तर झूठे, ईश्वर का प्रचार और प्रसार लोग कर रहे हैं, इन सब के निवारण के लिये अपने जीवन को अर्पित कर दो।दयानन्द के लिए गुरु का यह आदेश बड़े गम्भीरता से विचार करने का विषय था। दयानन्द ने अन्त में निर्णय किया कि जिस सच्चे शिव को मैंने प्राप्त किया उस को प्राप्त करके मैं अकेला मोक्ष पहुंच गया तो, क्या? ये अनेक आत्माएँ तो अविद्या के अन्धकार में डूबी हुई हैं। अत: इनको भी अपने साथ मुक्ति दिलाऊंगा। यह दयानन्द का तीसरा प्रण था जो प्रण उन्होंने अपने पहले दो प्रण पूरा करने के बाद लिया। और इन्हीं से ऋषि दयानन्द के सामाजिक सुधार कार्यों और धार्मिक अन्धविश्वासों के निवारण और खण्डन का युग प्रारम्भ होता है।

इस प्रण को ऋषि ने लिखित रुप से जनता के समक्ष रखा और इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने ईश्वर के नाम जितने भी मतान्तर सम्प्रदायों के रूप में संसार में फैले हुए थे उनसब को पर्दाफाश करके सच्चे शिव-सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जनता जनार्दन के समक्ष उजागर करने के लिये क्रान्ति का बिगुल बजा दिया, पाखण्ड-खण्डनी पताका आकाश में फहरा दी, धर्म के नाम पर भयंङ्कर अन्धकारपूर्ण अन्धविश्वासों के जाल में जन-साधारण को जकड़ कर अपनी गद्दी बनाने और बनाये रखने में लगे हुए सभी धर्मगुरुओं को सच्चेशिव ईश्वर का सच्चा स्वरुप निर्धारित करने और उसे ही एकमात्र समूची जनता का उपास्य बनाने का आह्वान किया। इसके साथ-साथ अनेक सामाजिक कुरीतियां जो धर्म और परम्परा के नाम पर हजारों वर्षों से प्रचलित थी, उनका खण्डन किया ताकि समाज और व्यक्ति की उन्नति में कोई बाधा न आने पाये। इस नकारात्मक पक्ष को जनता के समक्ष रखने से पहले सकारात्मक पक्ष रखा, अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की जिस का प्रथम समुल्लास ईश्वर, सच्चे शिव का स्वरूप उजागर करने और उसी का बखान करने के उद्देश्य से लिखा गया। आगे के समुल्लासों में भी जीवन के सकारात्मक पक्ष-कर्त्तव्य पक्ष की व्यवस्था दी और अन्तिमभर समुल्लासों में धर्म के नाम पर-ईश्वर के नाम पर जो पाखण्ड और अन्ध विश्वासों पर आधारित समुदाय चल रहे थे। जिसे सच्चे शिव का स्वरूप भूल कर मानव शिव या ईश्वर के झूठे स्वरूप में भटक रहा था। उसका भण्डा फोड किया। यह ऋषि के जीवन का समूचा कार्यकलाप-समग्र गतिविधियां केवल शिव के स्वरुप का प्रचार-प्रसार करने के लिये ही तो थी। फिर डॉ. जोर्डन ने कैसे लिख दिया? कि दयानन्द अपने उद्देश्य से भटक गया।

किन्तु इन सब गतिविधियों के पीछे ऋषि की भावना समझने की महती आवश्यकता है जो भावना उन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक बार भूरिश: स्पष्ट अभिव्यक्त की है और वह भावना थी। मात्र कल्याण की भावना, सच्चे मार्ग का निर्देश करने की भावना, सत्य और असत्य को नीर क्षीर विवेक करके बतलाने की भावना जो उनकी सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रयुक्त सत्यार्थ शब्द से स्पष्ट हो जाती है। ईश्वर और शिव के सम्बन्ध में खोज करने में अपना जीवन लगाने के पश्चात् जो कुछ उन्हें प्राप्त हुआ वह सत्यार्थ प्रकाश में जनता-जर्नादन मानव जाति के सामने रख दिया। ऋषि का यह आदेश ऐसे ही था जैसे कि किसी ने पूर्व दिशा की ओर जाना है और वह पश्चिम दिशा को ही पूर्व दिशा समझकर चल पड़े, किन्तु दूसरा व्यक्ति जो यह जानता हो कि यह व्यक्ति पश्चिम दिशा को पूर्व दिशा समझकर भ्रान्तिवश गलत दिशा में जा रहा है, और वह उसपर कृपा करके उसके हित की भावना उसे बतलाए कि भाई यह पूर्व दिशा नहीं है जिसकी ओर तुम जा रहे हो, पूर्व दिशा तो इधर है यही हित की भावना ऋषि की थी। जैसे विद्यालय में यदि कोई बच्चा दो और दो के जोड़ के उत्तर गलत समझता हो और अध्यापक के पूछने पर वह पांच, छ या तीन आदि गलत उत्तर देता है तो सही उत्तर जानने वाले अध्यापक का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह उसे सही उत्तर 'चार' बतलाये। यही सही उत्तर दिशा बतलाने की हित की भावना ऋषि की थी। इस भावना को ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश की मुख्य भूमिका और सभी अनुभूमिकाओं में स्पष्ट किया हैं कि मेरी भावना किसी का अपमान करने, नीचा दिखाने या कष्ट पहुंचाने की नहीं है अपितु सत्य असत्य स्पष्ट बतलाकर मानव जाति का हित और कल्याण करने का उद्देश्य है।

ऋषि का अन्तिम माया-महाप्रयाण-निर्वाण उनके उद्देश्य की प्राप्ति और उसी में जीवन लगाने और उसी में अपना जीवन समाप्त करने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

दीपावली का दिन है। विष शरीर से फूट-फूट कर निकल रहा है। महीने भर इस असह्य पीड़ा से ग्रस्त होते हुए भी उफ तक कभी नहीं की। अब यह शरीर जर्जर हो चुका है और अधिक अब इस शरीर में नहीं रहना चाहिये। अत: उस प्रत्यक्ष परमात्म-दृष्टा योगी ऋषि ने निर्णय किया कि आज इस शरीर को त्याग कर परम-शिव परमात्मा के अनन्त आनन्द में विलीन होना है। जिस सच्चे शिव का बोध और प्राप्त करने के महाव्रत को लेकर घर छोड़ा था। सायंकाल सूर्यास्त होने को है। सब भक्तों को आदेश दिया कि मेरे पीछे आ जाओं। अजमेर में भिनाय की कोठी, जिस में ऋषि रोगशय्या पर लेटे हुए हैं, उस के सब खिड़की दरवाजे खोलने का आदेश दिया। अब एकमात्र शिव में विलीन होने के लिए इस शरीर से महा-प्रयाण करने का अन्तिम क्षण आ गया। अन्तिम महावाक्य जो ऋषि ने बोले और सब लोगों ने सुने वह उन महान ऋषि के सम्पूर्ण जीवन की साधना का सार उनके जीवन की उपलब्धियों का सार और सभी दर्शन-शास्त्रों का अन्तिम गहन तत्त्व अन्तर्निहित है। वे महावाक्य थे- "ईश्वर तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो"। इन अन्तिम शब्दों में ऋषि के जीवन की उपलब्धि का सार और उनके जीवन दर्शन का गहन तत्त्व छुपा हुआ है जो स्वतन्त्र खोज का विषय है। ऋषि जिस सच्चे शिव को जानने का व्रतलेकर घर से निकले थे उसी की खोज और प्राप्ति में सम्पूर्ण जीवन लगाया उसी का बोध समस्त संसार को करवाने के लिए प्रचार-प्रसार में अपना जीवन लगा दिया, उसी एकमात्र विश्व की परम महान शक्ति को जीवन में सर्वत्र हाजिर नाजिर समझ कर सब कार्य किये, अपने सभी लिखित और वाचिका रूप में उसी को एकमात्र आधार माना, उसी परम शक्ति के सहारे तूफानों और भयंङ्कर आपदाओं से टक्कर ली और अन्त में उसी को प्रत्यक्ष करते हुए उसी में विलीन हो गये। फिर भी डॉ. जॉर्डन ने कैसे लिख दिया? कि- "दयानन्द अपने उद्देश्य से भटक गये?"

- डॉ. महावीर मीमांसक
वैदिक शोध सदन,
ए-3/11, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

दयानन्द के आने से .....

दयानन्द के आने से, फैला उजाला।
डूबती नैय्या को, ऋषि ने संभाला।।

दयानंद जब आये, काली घटा थी।
दिया ज्ञान वेदों का निराली छटा थी।
पाताल से ऋषि ने वेदों को निकाला।
डूबती नैय्या को.....

उन्हीं की बदौलत, हमने स्वराज पाया।
ईश्वर की भक्ति का, सत्य-मार्ग बताया।
वेद-विरुद्ध मतों का खण्डन कर डाला।।
डूबती नैय्या को.....

वेदों की महत्ता ऋषि, सभी को बताते।
जन्म से नहीं कर्म से, वर्णाश्रम-श्रम कहाते।
नारी का उत्थान किया बन वेदों का रखवाला।।
डूबती नैय्या को.....

जीवन गुरु को अपने, अर्पण कर दिया।
घातक को अपने, 'प्रद्युम्न' अभय कर दिया।
पाँच सौ रुपया देकर, विदा कर दिया।
हमको पिलाया अमृत, खुद पिया विष का प्याला।।
डूबती नैय्या को.....

- पं. प्रद्युम्न आर्य, बड़ौत (उ.प्र.)

पुण्य स्मरण

आर्य शिरोमणि म० बेगराज आर्य भजनोंपदेशक : "संगीत सम्राट के अन्तिम दर्शन"

वैदिक संगीत के पुरोधा अपने जीवन शतक पर पहुंचने ही वाले थे। अकस्मात् विधि का वज्रपात हो गया। वह आर्य समाज के जिस किसी भी आयोजन में सम्मिलित होकर अपना मनोहर प्रेरणादायी कार्यक्रम प्रस्तुत करते हो वहीं पर वैदिक संगीत के मंगलकारी सुमधुर स्वर झंकृत हो उठते थे और श्रोतागण संगीत की सरिता में डुबकी लगाते हुए भाव विभोर होने लगते थे। सैकड़ों लोग इन अवसरों से लाभ उठाने के लिए सदैव लालायित रहते थे। उनके इस प्रेरणादायी संगीत से जहां मानसिक सन्तुष्टि होकर हृदय को सुखद अनुभूति होती थी, वहीं आध्यात्मिक दिलासा भी शान्त होती थी। इसीलिये आर्य जनता की अभिलाषा थी कि उनके संगीत का यह मंगलकारी क्रम अनवरत रुप से अभी चलते रहना चाहिए। क्योंकि उनकी जिज्ञासा अभी अपूर्ण व अदृश्य ही प्रतीत होती थी। किसी को किंचिन्मात्र भी यह आशंका न थी कि इस मधुर स्वप्न की कड़ी का विच्छेदन भी हो सकता है, तभी तो उनके अभिनन्दन के सुअवसर पर अनेक संन्यासियों, मनीषियों व अनेक सुहृदयी जनों के शरद:शतम् की कामना के साथ ईश्वर से उनके दीर्घ जीवन की प्रार्थना की थी। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि विधाता को इसकी स्वीकृति प्राप्त न थी।

2014 की साल में अगस्त की एक प्रात: मैं ध्यान से उठा ही था कि अचानक एक दु:खद सूचना प्राप्त हुई कि बेगराज जी नहीं रहे। इस दु:खद सूचना से मर्मान्तक पीड़ा हुई, क्योंकि उनका हमारे हृदय में निवास था। मैंने तुरन्त ही आदरणीय स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी को सूचित किया, स्वामी जी भी अचानक सन्न रह गये। स्वामी जी से वह बहुत आत्मीयता रखते थे। केवल तीन या चार मास से भी कम समय से वह प्रचार कार्य में असमर्थता अनुभव करते हुये घर पर ही विश्राम कर रहे थे। मेरा तथा स्वामी जी का अनेक बार उनके यहां जाकर उनकी कुशलक्षेम जानने का कार्यक्रम भी बना लेकिन इस जीवन की भागदौड़ व हायमरी ने हमें इस सौभाग्य से भी वंचित ही रख दिया। हम दोनों ही व्यथित होकर रह गये। हम दोनों ने ही भूड़िया पहुंच कर संगीत की उस महान विभूति के अन्तिम दर्शन किये जिसे मंचासीन देखकर सैकड़ों लोगों के हृदय उल्लसित हो उठते थे। वह सम्मान प्रिय व्यक्ति थे, मेरे उनसे पारिवारिक सम्बन्ध थे। यह दुर्भाग्य ही था कि 46 वर्ष में यह प्रथम अवसर था कि 3-4 मास से उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त न हो सका था वरना किसी न किसी बहाने उनसे भेंट होती रहती थी।

आकर्षक व्यक्तित्व उन्नत ललाट, गोलाई लिये चमकता चेहरा, उस पर कुर्त्ता धोती व साफे की भारतीय वेषभूषा देखते ही बनती थी। सरलता व सादगी तथा सर्वथा मुस्कान उनकी पहचान थी। दूसरों को सम्मान देकर उन्हें उत्प्रेरित कर स्वयं को इससे पृथक् रखना उनकी आदत बन गई थी। वह प्रख्यात भजनोपदेशक ही नहीं प्रत्युत तक स्पष्ट और निर्भीक वक्ता भी थे। जब कभी वह प्रचार के समय प्राचीन कथानकों को आधार बनाकर सामाजिक कुरीतियों व दुर्व्यसनों पर प्रहार करते थे तो अनेक लोग संकल्पित होकर उस पर अमल प्रारम्भ कर देते थे। राजनीति पर उनके सुलझे हुए विचार तथा अवसर वादी एवं तुष्टिकरण की राजनीति के विरुद्ध उनके तर्क बड़े-बड़े दिग्गज राजनैतिकों को विचारने को बाध्य कर देते थे। यहां वह ध्यान योग्य बात यह भी है कि किसी आयोजन के किसी भी अवसर पर वह आर्यत्व से समझौता नहीं करते थे। चौ० चरणसिंह व देवीलाल सदृश देश के अनेक शीर्षस्थ नेताओं के दरबार में वेगराज जी की प्रत्येक बात को सम्मान दिया जाता था। प्रसिद्ध बाग्यी नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री जी तो वेगराज जी को अपना अनुज ही स्वीकारते थे। भूडिया में एक साधारण परिवार में जन्मे बेगराज जी का कार्य क्षेत्र एक दो जनपद अथवा एक दो प्रदेश नहीं अपितु समस्त भारतदेश और उससे भी कहीं बाहर मॉरिशस तक में उनकी धूम मच चुकी थी। बड़े-बड़े उपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी ख्याति प्राप्त आर्य नेता उनकी वाणी का लोहा मानते थे। उनकी वाणी पर सरस्वती का वास था। विश्वास नही होता कि वेगराज जी नहीं रहे। इस प्रकार की अनेक पीड़ा दायक घटनाओं का अवलोकन कर विचारों से विवश होना पड़ता है कि विधाता के यहां ऐसी आत्माओं के लिये अधिक स्थान सुरक्षित है।

अत्यन्त संक्षिप्त रूप से वेगराज जी की प्रचार शैली पर विचार करके देखिए। आर्य समाज के उत्सवों, कथाओं तथा आर्य महासम्मेलनों में उनके द्वारा आर्य जनता को राष्ट्र भक्ति व प्रभुभक्ति का रसास्वादन कराया जाता था। अनेक अवसरों पर जब वह रामायण के व्यावहारिक धरातल पर बोलते थे तो श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते थे। कभी उनके मुख से सिद्धान्तहीन, भद्दे अश्लील चुटकुले सुनने को नहीं मिलते थे। जिस रस पर भी वह बोलते थे उसका प्रत्यक्ष चित्रांकन दृष्टिगोचर होता था। आपको स्मरण होगा कि- जब कभी वह राष्ट्र कवि हरिओम् पंवार की ये पंक्तियाँ सम्मेलनों में बोलते थे कि "जाने किस दिन लाल किला मर्दानी भाषा बोलेगा" तो श्रोता तड़प उठते थे। इस प्रकार उनका निरहंकार तथा संन्यासी जीवन सभी को प्रेरणा देता रहेगा। उनकी गायन शैली भी प्रेरणादायक तथा अद्वितीय थी। उनके प्रत्येक गीत में संगीत का जादू नजर आता सार्वदेशिक को चाहिए कि वह इस प्रकार के उपदेशक विद्यालयों की स्थापना पर विचार करें जिनमें पृथक् से योग अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना से बेगराज सदृश वैदिक संगीत के पुरोधाओं के निर्माण में सहयोग प्राप्त हो सके। आर्य समाज की उनके प्रति यह सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी।

अन्त में हम अपने सभी साथियों सहयोगियों तथा गुरुकुल परिवार की तरफ से संगीत के सरताज को श्रद्धा सुमन अर्पित करते रहें। कहना चाहेंगे कि उनके संगीत प्रेमियों की संख्या लाखों से उपर पहुंच गई है, कितने उतावले श्रद्धास्पद होकर उनके कार्यक्रमों को सुन रही थी आर्य जनता, किसी शायर ने ठीक ही कहा है।

बड़े शौंक से सुन रहा था जमाना,
तुम ही सो गये दास्तां कहते-कहते।

- वेदानन्द आर्य, (हापुड)

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द जी के .....

जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सब दिन बढ़ता जाये।

(2) **संवदध्वम्** - प्रीति से बातचीत, प्रश्न, उत्तर और संवाद करके संगठन शक्ति को बढ़ाना।

(3) **संवो मनांसि जानताम्**- तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को बढ़ाते रहो। तुम लोग ज्ञानी होकर नित्य आनन्द में बने रहो। मन-प्रकाश युक्त रहे। पुरुषार्थ को नित्य बढ़ावें।

(4) **देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते**- जैसे पक्षपात रहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेद रीति से सत्य धर्म का आचरण करते हैं। उसी प्रकार से तुम भी करो।

(5) **"मित्रस्य चक्षुष समीक्षामहे"**
यजु० अ० 6 मंत्र 18

दृते हे सब दु:खों के नाश करने वाले परमेश्वर! आप हम पर ऐसी कृपा कीजिए जिससे हम लोग आपस में बैर को छोड़कर एक दूसरे के साथ प्रेम-भाव से वर्त्तें। हम सब लोग आपस में मिल के सदा मित्र-भाव रखें। जो ईश्वर का कहा धर्म है यही सब मनुष्यों के मानने के योग्य है। महर्षि मनु के अनुसार धर्म के दस लक्षण हैं- **(1) धृति**- धैर्य रखना **(2) क्षमा**- शरीर में सामर्थ्य होकर, क्षमाशीलता का परिचय देना **(3) दम**- मन की वृत्तियों का निग्रह करना **(4) अस्तेयम्**- चोरी न करना **(5) शौचम्**- अन्दर और बाहर से अपने को पवित्र रखना **(6) इन्द्रिय निग्रह**- अपनी इन्द्रियों को या वृत्तियों को अपने वश में रखना, उन पर संयम रखना **(7) धी**- बुद्धिमानी का परिचय देना **(8) विद्या**-ज्ञान प्राप्त करना **(9) सत्यम्**- सत्य-भाव, सत्य वचन, सत्य क्रिया **(10) अक्रोध:**- क्रोध न करना और **ग्यारहवाँ धर्म "अहिंसा परमो धर्म:"**- मन, वचन और कर्म से किसी भी काल में किसी भी प्राणी की हिंसा न करना धर्म है। **"त्रयो धर्म स्कन्धा: यज्ञोऽध्ययन दानमिति"** छान्दोग्योपनिषद् (2-23-1)

1- **यज्ञ**- यज्ञ करना, होम करना धर्म है। यज्ञ से प्राणीमात्र का बहुत ही उपकार धर्म होता है। यज्ञ सबसे उत्तम कार्य है।

2-**अध्ययनम्**- लड़के-लड़कियों को पढ़ाना। वेदाध्ययन करना चाहिए जिससे ज्ञान बढ़ता है। श्रेष्ठ ग्रन्थों को पढ़ना धर्म है।

3- **दानम्**- विद्या-वृद्धि के लिए धन दान दिया जाये। दीन, दु:खी, अपाहिज, रोगी, असहाय की सहायता के लिए दान देना धर्म है। आचार्य चाणक्य के शब्दों में- **"नास्ति धर्म समः सखा"**- चाणक्य सूत्राणि- 233

अर्थात् संसार में मनुष्य का धर्म अथवा कर्त्तव्य-पालन सबसे बड़ा साथी है। धर्म ही मनुष्य के साथ परलोक में जाता है। अधर्म रूप कर्म मनुष्य को नरक गामी बनाता है। हमें ऋषियों, पूर्वजों, आचार्यों के अनुसार धर्म का आचरण करना चाहिए अधर्म का नहीं। कविवर प्रकाश के शब्दों में-महर्षि देव दयानन्द के विचारों का जादू प्रत्येक भक्ति को झकझोरने वाला है-

"धूर्त ठगों के भुलावे में आ,
धन-धर्म लुटा रहे थे जन भोले।
देव दयानन्द आये तभी, कर सत्य
प्रचार हृदय पट खोले।
देश के कारण कष्ट सहे, पुर ग्राम
पहाड़ बनो बिच डोले।
गायें प्रकाश सभी ऋषि के गुण,
जादू वो जो सिर चढ़ बोले।।"

इस प्रकार महर्षि के कल्याणकारी विचारों का कुछ-कुछ आदर्श उदाहरण के रूप में आपके सामने रखा है। उनके कल्याणकारी विचारों का पिटारा तो एक विशाल समुद्र है, उसमें हम जितना-जितना खोज करते जायेंगे, उतने-उतने बहुमूल्य मोती के रूप में उनके विचार हमें प्राप्त होते जायेंगे। शेष विचार सूत्र अगले लेख में देने का प्रयास करेंगे। आशा है ये विचार स्वाध्यायशील सुधीजनों की जिज्ञासा को बढ़ायेंगे।

जैसे कवि अपने मधुर छन्द पर निछावर है।
जैसे प्रेमी चकोर चन्द पर निछावर है।
भृंग अरविन्द के मकरन्द पर निछावर है।
तैसे दिल मेरा दयानन्द देव पर निछावर है।।"

- 44-ए., दूसरी मंजिल, बी.ब्लाक, 2 फेस, बुद्धबाजार, विकास नगर, नई दिल्ली- 110059 (9250906201)

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
स्वाध्याय प्रेमियों के लिए
365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें
वैदिक विनय
20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 102वाँ वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 19 अक्तूबर, 2014
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रात: 8 बजे
ब्रह्मा : आचार्य श्री सत्य प्रकाश जी
संगीत : महाशय श्री जगत वर्मा
श्री कुलदीप जी
शिक्षा सम्मेलन : 10:30 बजे
आप सपरिवार एवं ईष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित है। - ***आचार्य देवव्रत, प्राचार्य***

आर्य समाज रामबास बुलन्दशहर

11 कुण्डीय चतुर्वेद परायण महायज्ञ

25 से 27 अक्टूबर 2014 तक
यज्ञ : प्रात: 7.30 से 10.30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य ओमव्रत जी
भजन : आचार्य श्यामवीर राघव
भजन-प्रवचन : दोप.1.30 से 5.30 बजे
रात्रि 7.30 से 11.30 बजे
समापन समारोह : 27 अक्तूबर
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचें
- ***प्रमोद शास्त्री, संयोजक***

आर्य समाज मन्दिर शकूर बस्ती के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ

17 से 19 अक्टूबर 2014 तक
समापन एवं पूर्णाहुति : 19 अक्तूबर
पूर्णाहुति : प्रात: 7 से 9 बजे
ब्रह्मा - आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
भजन : श्री अंकित उपाध्याय
भजन-प्रवचन - प्रात: 9.30से 1 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचें
- ***धर्मपाल बक्शी, महामन्त्री***

आर्य समाज बाँगर मऊ उन्नाव

"43 वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेदशतकम् पारायण यज्ञ"

12 से 16 नवम्बर- 2014
स्थान : जी.पी. पैलेस गैस्ट हाउस, संडीला रोड, बांगरमऊ, उन्नाव (उ.प्र.)
ब्रह्मा: आचार्य आर्य नरेश (हिमाचल)
भक्ति संगीत : श्री भीष्म जी एवं श्रीमती संगीता आर्या जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचें
- ***रामगोपाल आर्य, प्रधान***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दक्षिण दिल्ली क्षेत्र विचार गोष्ठियाँ

26 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
संयोजक : श्री राजीव चौधरी, मो. 9810014097
दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। कृपया गोष्ठी के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य करें।- **विनय आर्य, महामन्त्री, मो. 9958174441**

अरुणा सतीजा सम्मानित

आर्य बहिन श्रीमती अरुणा सतीजा को, राजस्थान सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, श्री फल एवं शाल ओढ़ाकर आदरणीय राज्य मंत्री श्री अरुण चतुर्वेदी जी द्वारा सम्मानित किया गया है। 1 अक्टूबर 2014 को राज्य स्तरीय वृद्धजन समारोह का भव्य आयोजन पिंकसिटी प्रेस क्लब जयपुर में उत्साह पूर्वक किया गया।

गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) का 103 वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद(म.प्र.) का 103 वां वार्षिकोत्सव दिनांक- 5, 6, 7, दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यात नाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। समस्त आर्यजन पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।- **आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक,** सचिव

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का अभिनन्दन समारोह 'अमृत महोत्सव'

आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी डॉ० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के 75 वें जन्मोत्सव पर, अभिनन्दन समारोह का आयोजन, योग निकेतन पंजाबी बाग,नई दिल्ली) में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाएगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या मे पहुंचकर अपनी शुभकामनाएं अर्पित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक सेवा आर्यसमाजें सभा की इस सेवा लाभ से उठाएं

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग की ओर से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए उपदेशक/भजनोपदेशक भेजने का कार्य नियमित रूप से होता है। ऐसी समस्त आर्यसमाजें जहां उपदेशक/भजनोपदेशक नियमित रूप से नहीं आते हैं और वे विद्वानों को आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों पर उपदेशक आदि बुलाने के लिए सभा के अन्तर्गत संचालित वेद प्रचार विभाग के **सहायक अधिष्ठाता आचार्य ऋषिदेव आर्य जी से मो. 9540040388** पर सम्पर्क करें। आचार्य जी द्वारा आपकी आर्यसमाज/संस्थान के लिए आगामी छह मास के साप्ताहिक सत्संग निर्धारित किए जा सकेंगे।
- ***महामन्त्री (9958174441)***

शोक समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा को पितृशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली सभा के कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा जी के पूज्य पिता श्री हरीशचन्द्र तनेजा जी के दिनांक 9 अक्तूबर, 2014 को उनके दिल्ली निवास पर हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सुभाष नगर श्मशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा दिनांक 12 अक्तूबर को आर्यसमाज सी -3 जनकपुरी में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि दी।

श्री तनेजा जी आर्य विचारधारा पैतृक रूप प्राप्त हुई थी, जिसे उन्होंने अपनी सन्तानों के हृदयों में रोपित किया, जिसके प्रभाव से आज उनका सम्पूर्ण परिवार आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द जी की विचार-धारा से ओत-प्रोत है, तथा उसे प्रचारित-प्रसारित करने में अग्रसर है।

श्री प्रेम सचदेवा जी को मातृशोक

आर्यसमाज अशोक विहार-1 के वरिष्ठ सदस्य, कर्मठ अधिकारी एवं दिल्ली सभा की वेदवाणी समिति के सहसंयोजक श्री प्रेम सचदेवा जी की पूज्य माताजी श्रीमती शान्तिदेवी जी सचदेवा का दिनांक 7 अक्तूबर को 95 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा उनके निवास स्थान पर 10 अक्तूबर को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उनके सुपुत्र श्री प्रेम एवं हरीश सचदेवा जी ने आर्यसमाज अशोक विहार-1 को एक लाख तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को 50 हजार रुपये की राशि का चैक माताजी की स्मृति में स्थिर निधि हेतु प्रदान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सूचना

सभी सुधिपाठक जनों एवं लेखकों से निवेदन है कि 'आर्य-सन्देश' से सम्बन्धित, लेख, समाचार आदि aryasandeshdelhi@gmail.com पर भेजें। अथवा A-4 साइज पेपर पर लेख एवं पत्र को टाइप करा के ही भेजनें का कष्ट करें। - **सम्पादक**

निर्वाचन समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव

प्रधान - मा० सोभनाथ आर्य
महामन्त्री - श्री प्रभु दयाल चुटानी
कोषाध्यक्ष- श्री नरवीर लाल चौधरी

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके यहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-***मन्त्री, सार्वदेशिक सभा***
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

स्व. रामचन्द्र खट्टर जी जन्मदिवस पर

सामवेद पारायण यज्ञ

रविवार 26 अक्टूबर 2014
यज्ञ : प्रात: 05:30 से 11:00 बजे तक
यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य आनन्द प्रकाश आर्य
भजन व प्रवचन: 11 से 1 बजे
मुख्य वक्ता : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
स्थान: सी-30, नीलाम्बर अपार्टमेन्ट, रानीबाग, दिल्ली - 34 **निवेदक**
माता ईश्वर देवी-समस्त खट्टर परिवार

उत्तरदायित्व को भूल जाना, देर से करना, अच्छी तरह न करना, उसकी उपेक्षा करना, गलती होने पर भी उसे गंभीर न मानना, यह सब उत्तरदायित्व हीनता में आता है। जो उत्तरदायित्व को बहुत गंभीरता व अच्छी तरह निभाता है, श्रद्धा से कार्यों को करता है, वह लौकिक दृष्टि से तो सफलता और उन्नति प्राप्त करता ही है साथ ही योग में भी अच्छी प्रगति करता है
- ***स्वामी सत्यपति जी, रोजड़***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 13 अक्तूबर से रविवार 19 अक्तूबर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16/17 अक्तूबर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 अक्तूबर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत समस्त

आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक विचारोत्सव

कल आज और कल

21 नवम्बर, 2014 प्रात: 8:25 से

तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है आप सब विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थियों सहित अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। कृपया अपने पहुंचने की सूचना यथाशीघ्र 9540002856 पर देने का कष्ट करें ताकि समुचित व्यवस्था की जा सके।

–: निवेदक :–

ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान — धर्मपाल आर्य, व. उप प्रधान

विनय आर्य, महामन्त्री — सुरेन्द्र रैली, प्रस्तोता

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली एवं समस्त विद्यालयों के पदाधिकारीगण

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन

इलाहाबाद हाई कोर्ट लखनऊ खण्ड पीठ का निर्णय

दिनांक 14 अप्रैल, 2013 का निर्वाचन ही मान्य

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा – प्रधान, स्वामी धर्मेश्वरानन्द- मन्त्री एवं डॉ. धीरज सिंह- कोषाध्यक्ष रहेंगे।

यह आदेश कोर्ट की वैबसाइट www.allahabadhighcourt.in पर उपलब्ध है।

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मन्त्री

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2015

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक आर्डर बुक कराने पर 10% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह